E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

April-May-June 2021
Vol.-VIII, Issue-II

Multidisciplinary Issue

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. Kamalakar Gaikwad (Guest Editor, English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

हिंदी विभाग

26	पर्यावरण प्रभाव आकलन (ईआईए) अधिसूचना-2020 : एक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. सुभाष दोंदे	114
27	निर्गुण संतो का परिवर्तीत युग पर प्रभाव	डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी	122
28	संत साहित्य में विश्वबंधुत्व - ज्ञानेश्वरी के पसायदान के संदर्भ में	डॉ. माधुरी जोशी	125
29	प्रेमचंद की ग्राम्य जीवन की कहानियाँ	डॉ. साधना भंडारी	129
30	शैलेश मटियानी के उपन्यासों में चित्रित महानगरिय जीवन	डॉ. हेमलता काटे	134
31	गिलीगडू उपन्यास में चित्रित वृद्ध जीवन की त्रासदी	डॉ. विष्णु राठोड	137
32	तुलनात्मक दृष्टी से निराला ओर मुक्तिबोध के काव्य में समानता	डॉ. ओमप्रकाश झंवर	140
33	हिन्दी कहानियो में उभरती आधुनिकता	नेमलता ठाकूर	144
34	मुंबई तटीय सड़क परियोजना : एक असन्धारणीय परिवहन प्रणाली	डॉ. सुभाष दोंदे	148
35	उध्यानिको से बदलता आर्थिक जीवन : हनुमानगढ	डॉ. एस. एस. खींची, जगदीश कुम्हार	156

मराठी विभाग

36	महाराष्ट्रातील वाघ्या-मुरळी उपासक	डॉ. शंकर मुंडे	166
37	अहिराणी लोक वाङ्मयातील उखाण्यांमधील भावसौंदर्य	डॉ. रंजनी लुंगसे	170
38	आदिवासी साहित्यनिर्मितीच्या प्रेरणा	प्रा. राजू शनवार	174
39	आदिवासी चरित्र आत्मचरित्र : एक आढावा	प्रा. संतोष हापगुंडे	177
40	म. जोतीराव फुले यांचा स्त्री-शिक्षणविषयक दृष्टीकोन	डॉ. अनमोल शेंडे	180
41	बहिणाबाई चौधरी म्हणजे ग्रामीण कवितेचा मानदंड	प्रा.गजानन जाधव	184
42	तेंडोली (बागलांची राई) वेंगुर्लेचे चिं. त्र्यं. खानोलकर ऊर्फ आरती प्रभू -लेखन प्रेरणा	प्रा. डॉ. बाळकृष्ण लळीत	186
43	व. बा. बोधे यांचे ललित लेखन	निलिमा लोहोर	194
44	ग्रामीण कादंबरी एक परिप्रेक्ष्य -	डॉ. विजय केसकर	199
45	१९९० नंतरच्या मराठी कादंबरीतील परिवर्तन	डॉ.राजाराम सोनटक्के	202
46	१९९० ते २००५ या कालखंडातील मराठी ग्रामीण कादंबरी	डॉ. बिभीषण देशमुख	206
47	ग्रामीण साहित्यात प्रवाह निर्माण होण्याची कारण परंपरा	डॉ. अरुण पाटील	211
48	'अवकाळी पावसा दरम्यानची गोष्ट' : कृषी समाज जीवनाचे यथार्थ चित्रण करणारी कादंबरी	प्रा. प्रशांत पाटील	217
49	वऱ्हाडी कवितेतून साकार झालेला वऱ्हाडी माणूस व त्याचे दुःख	प्रा.गजानन जाधव	220
50	मधुकर सहकारी साखर कारखाना लि. फैजपूर चा ग्रामीण विकासातील सहभाग ऐतिहासिक दृष्टीकोनातून अभ्यास (विशेष संदर्भ 1980-1991)	प्रा. किशोर पाटील	223
51	कोविड -१९ : भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील आर्थिक व सामाजिक परिणामांचे अध्ययन	डॉ. डी. एन. सोनवणे	228
52	कोविड-१९च्या काळात भारतीय रोजगार क्षेत्रासमोरील आव्हाने आणि उपाययोजना	डॉ. जयश्री सरोदे	234
53	महाराष्ट्रातील दुष्काळ : समस्या आणि उपाय	प्रा. देवानंद मंडवधरे	239
54	भारतातील सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेच्या कार्यप्रणालीचा अभ्यास	डॉ. मधूकर अनंतकवळस	243
55	कॉर्पोरेट सामाजिक जवाबदारी : प्रकल्प 'नन्ही कली' एक विश्लेषणात्मक अभ्यास	डॉ. करुणा कुशारे, माधुरी झाडे	251

'RESEARCH JOURNEY' *International E- Research Journal*
Vol.-VIII, Issue-II
Peer Reviewed Journal

E-ISSN :
2348-7143
April-June
2021

निर्गुण संतो का परिवर्तीत युग पर प्रभाव

प्रा. डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी
के.बी.एच. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य
महाविद्यालय निमगांव,
ता. मालेगांव, (नाशिक)
महाराष्ट्र, मो. 9421604624
Gmail – valmiksuryawanshi123@gmail.com

निर्गुण संत परम्परा के अग्रणी एवं मौलिक अधिष्ठता संतो का परवर्तीत युग पर स्पष्ट रुप से प्रभाव दिखाई देता है। निर्गुण संतो की परम्परा भी अपने आप में एक परिवर्तन रुप है। मध्ययुगीन साधना-साहित्य में 'संत' शब्द निर्गुण मार्ग के उस साधक के अर्थ में रुढ बन गया है जो अद्वैतवाद, अहिंसावाद, नामसाधना, अन्तसाधना, योगसाधना, प्रेमसाधना, सदगुरु का महत्व, सार्वभौम-मातृभाव, स्वानुभूति, साम्प्रदायिक ऐक्य और सामाजिक न्याय के समर्थन तथा उँच-नीच, जाति-पाति, छुआछूत, अन्ध-विश्वास, तीर्थव्रत आदि वाह्यडम्बरों के विरोधी है। निर्गुण परंपरा में संत कबीर से पूर्व संत नामदेव महाराष्ट्र के प्रसिध्द संत का नाम लिया जाता है। किंतु दोनों की संत परम्परा में मूल अंतर है। यदपि दोनों में कुछ समानताएँ भी है। निर्गुण संतो द्वारा प्रवर्तित संत-परंपरा मूलतः वैदिक विधि-विधान पुस्तक ज्ञान एवं ब्राह्मण संस्कृति अदि का विरोध करनेवाली है, जवकि महाराष्ट्र के वारकरी संतो को वेद-विहत एवं श्रृति सम्मत हरिभक्त-पथ स्विकार है। वारकरी संतो ने भक्ति को सर्वजन सुलभ बना दिया और जीवन के उस नैतिक पक्ष पर बल दिया जिसे कबीर, नामदेव, रहिदास आदि संतों ने विशेष महत्व दिया। संत नामदेव ने गुरु को महत्व दिया है। योग-साधना एवं ज्ञान-साधना का भक्ति के साथ समन्वय रुढियों का विरोध आदि अन्य बातों में कबीर को संत नामदेव के बाद स्मरण किए जाते है। वे उनसे प्रभावित भी और प्रतीत भी होते है - नामदेव कहते है -

"मैं बउरी मेरा राम भताऊ।
रचि-रचि ताकऊ करऊ सिंगार"।। .....(१)

कबीर भी उसी प्रकार के भाव की व्यंजना करते है -

"हरि मोरा पिउ मैं हरि की बहुरिया।
राम बडे मैं तनक लहुरिया"।।

नामदेव एवं कबीर दोनों ने राम (परमतत्व) के साथ दाम्पत्य भावना स्थापित की है, फिर भी कबीर अपनी भौतिकता तथा हिंदी के परम संत कवि होने के गौरवपूर्ण स्थान पर अधिष्ठित है। उनके समकालीन तथा परवर्तीत संतो पर उनका काफी प्रभाव मिलता है। कबीर की वाणी क्रांतीकारक और सत्यपूर्ण है। महाराष्ट्र के संत एकनाथ कबीर के परवर्तीत है। उनके काव्य में हिंन्दू-मुस्लिमों के बाह्यडम्बरों के विरोध में उठा स्वर कबीर की भागवत विशिष्टता से प्रभावित लगता है। कबीर का भाव छंद इस प्रकार है-

"जोरे, खुद मसजिद में बसत है।
और मुलक किस केरा?"

संत एकनाथ का छंद भी इसी से मिलता जुलता है -

"मसजिद ही में जो अल्ला खुदा
तो और स्थान क्या खाली पडा?"
"एका जनार्दन का बन्दा।
जमीन आसमान भरा खुदा।।" .....(२)

वैसे संत-मत की परम्परा अति प्राचीन है। जिसके अंतर्गत जयदेव, साधना, भजन साधना, आदि उल्लेखनीय है।.....(३) किंतु संत मत को विशुध्द रुप प्रदान करनेवाले संत कबीरदास ही माने गए है।

संत रैदास का अर्विभाव संत कबीर के समय में हुआ। कवि रैदास ने प्रेम की अनन्यता का अनेक रुप कों द्वारा सुंदर वर्णन किया है।.....(४) भक्त और भवगान का अभिन्न संयोग माधुर्यभाव से सम्पृक्त है। रैदास जी ने पारस मणि जिसके स्पर्श से लोह-हदय सुवर्ण वन जाता है। प्रेम-भाव के उदय विना पढने-सुनने कुछ भी समझ में नही आ सकता-

"पढे गुने कुछ समुझि न परई, जौ लौं भाव न दरसै।
लोहा हिरन होई छों कैसे, जी पारस नही परसै"।। .....(५)

सोलहवी शताब्दी के संतो में गुरुनानक का विशिष्ट स्थान है। साधना पक्ष में उन्होंने वाह्यडम्वरों की उपेक्षा की है और सदगुरु को महत्व दिया है। कबीर की तरह गुरुनानक ने भी गुरु-महिमा का गान अनेक प्रकार से किया है जिससे मनुष्य के अन्दर सदगुरु ने ज्ञान का दीपक जला दिया है, उसे अपने भीतर ही नाम रत्न मिल जाता है। .....(६)

"विना गुरु के न भक्ति होती है न भाव" .....(७)

गुरुनानक ने कबीर की भॉति ब्राह्यडबंरो का विरोध किया है परन्तु उनके विरोध में कबीर जैसी क्रांती की फटकार नहीं है। नानक ने मुस्लिमों की पॉच बार नमाज पढने की इवादत के स्थान पर सत्य वोलना, श्रम की कमाई, परमात्मा से सबका भला मॉगना, नीयत साफ रखना, मन साफ रखना और परमात्मा का यशगान पॉच नमाजें मानी है। .....(८)

कबीर की तरह गुरुनानक में भी युगदृष्य का व्यक्तित्व समाहित था। उन्होंने बहिर्यामी परमात्मा और अन्तर्यामी आत्मा की अभिन्नता बतलाते हुए उसकी घट-घट में व्यप्ति उसी प्रकार बतलाई है जैसे फुलों में सुगन्धि अथवा दर्पण में प्रतिविम्ब .....(९) संत नानक की नाम साधना का मूल मंत्र 'प्रेम' है। कबीर ही तरह प्रेमिका आत्मा में प्रिय नाम की खुमारी दिन रात चढी रहती है-

"नाम खुमारी नानका चढी है दिन रैनि।"

संत नानक ने भी परम प्रिय परमात्मा को स्वामी सेवक भाव, सखा भाव, वात्सल्य भाव और कान्ताभाव से प्राप्त करने का प्रयत्न किया है। इसमें कान्ताभाव ही सर्वोपरि है। संत नानक ने भी अपने प्रियतम के साथ कान्ताभाव का व्यवहार किया है। सुहागिन की तरह प्रेम पूर्ण श्रृंगार किए है। विवाह के समय मंगलाचार के गीत गाए जाते है-

"गवहु गावहु कामणि विवेक विचारु।
हमरे घरि आइआ जग जोवनु भताऊ"। .....(१०)

निर्गुण संतों के विचारों को दादू ने भी 'नाम' को महत्व दिया है। दादू के साहित्य में कबीर की तरह प्रेमानुभूति, माधुर्यभाव, तथा माधुर्यमय रहस्यवाद भी मिलता है। दादू की माधुर्यभाव की साधना में जीवात्मा और परमात्मा के दाम्पत्य भाव परक शाश्वत प्रणय - विलास को अनेक उद्भावनाएँ है। वह इस पावन रस की एक-एक घूँट को पीकर नित्य नई प्यास का अनुभव करता है-

"सुन्दरी कौ सॉई मिल्या, पाया सेज सुहाग।
पीव सौं खेले प्रेम रस, दादू मोरे भाग।" .....(११)

अतः निर्गुण परवर्तीत परम्परा सदैव चलती रहेगी क्योंकि परिवर्तन सृष्टि का, प्रकृतिका नियम है। निर्गुण संतो का प्रयोजन प्रेम रुपी साहित्य का निर्माण करना था। जिससे लोकमंगल, समाज का पुर्ण निर्माण तथा सहृदयो को आनंद मिलना है। वस्तुतः निर्गुण संतो का व्यक्तित्व से चतुर्दिक ज्ञान का बोध होता है, चरित्र और संस्कार की प्रेरणा मिलती है। और जीवन में जो कुछ सत्य है, सुन्दर है, मंगलमय है उसकी उद्भावना भी होती है। निर्गुण संतो के मतानुसार मानव समाज हितकारिणी है। जब-जब रुढियों, विद्रुपताओं और असंगतियो से समाज की प्रगति में बाधा पडती है। तब तब संत पुनर्निर्माण के लिए दत्तचित्त हो जाते है। निर्गुण संतोंने सामाजिक परिवर्तन के लिए सुधारणा तथा उन्नयन की क्रांन्ति आवश्यक है। परवर्तीत समाज के लिए पुर्नजागरण की प्रक्रिया